राधा कमल मुकर्जी : चिन्तन परम्परा

वर्ष 12 अंक 1 **जनवरी–जून 2010**

1.''महान भारतीय समाजशास्त्री प्रोफेसर घूर्ये : जिन्होंने आजीवन लेखनी को विराम नहीं दिया''–प्रोफेसर बंशीधर त्रिपाठी, सेवानिवृत्त प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उ.प्र.)

''भारत में समाजशास्त्री बहुत हैं, पर समाजशास्त्रियों की इस लम्बी बारात में भारतीय समाजशास्त्री केवल एक है– प्रोफेसर घूर्ये।'' प्रोफेसर डी.पी. मुकर्जी का यह कथन सत्य ही है। उस महान भारतीय समाजशास्त्री के जीवन एवं आजीवन लेखन से संबंधित प्रस्तुत लेख श्रद्धेय प्रोफेसर बंशीधर त्रिपाठी की अनुमति से उनकी पुस्तक ''रचना–समग्र–खण्ड 2: समाज, सामाजिक चिन्तन तथा विविध'' से साभार लेकर यहां प्रकाशित किया गया है।

2.''क्रान्तिकारी खुदीराम के जीवन के कुछ प्रसंग''– डॉ. हितेन्द्र कुमार पटेल, रीडर इतिहास विभाग रवीन्द्र भारती विश्व विद्यालय, कोलकाता (बंगाल)

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाले क्रान्तिकारियों में खुदीराम बोस का एक विशिष्ट स्थान है, विशेषकर उनकी आयु को दृष्टिगत रखते हुए। खुदीराम इस पृथ्वी पर मात्र 19 वर्ष ही रहे। उनके बारे में अभी पर्याप्त जानकारी उपलब्ध नहीं है। प्रस्तुत आलेख खुदीराम बोस के क्रान्तिकारी बनने और मुजफ्फरपुर के लिए रवाना होने के दौर पर प्रकाश डालने का प्रयास है।

3.''पूँजी का वर्चस्व और भारतीय समाज''–प्रोफेसर ए.एल. श्रीवास्तव, पूर्व अध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग, बी. एच.यू., वाराणसी (उ.प्र.),डॉ. ए.के. श्रीवास्तव, पूर्व प्रोजेक्ट फैलो समाजशास्त्र विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उ.प्र.)

पूँजीवाद समकालीन विश्व की एक बहुआयामी चुनौती है। एक वैचारिकी के रूप में तथा समाजार्थिक नियोजन, नीति एवं कार्यप्रणाली के रूप में पूँजीवाद ने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया है। वर्तमान भारतीय समाज में पूँजीवाद के बढ़ते हुए वर्चस्व को प्रस्तुत लेख में उजागर किया गया है।

4.''हिन्दू–विवाह में कर्मकाण्डों के महत्व का समाजशास्त्रीय विवेचन''–सुषमा नयाल, अंशकालिक प्रवक्ता समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग, हे.न.ब. गढ़बाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल (उत्तराखण्ड), प्रोफेसर जे0पी0 पचौरी ,अध्यक्ष, समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग, हे.न.ब. गढ़बाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

कर्मकाण्डों एवं रस्मों की अनिवार्यता भारतीय हिन्दू–विवाह की विशेषता है। यह कर्मकाण्ड हिन्दू–विवाह के स्वरूप को धार्मिकता प्रदान करते हैं। हिन्दू–विवाह की इस अनिवार्य विशेषता पर आधुनिक उच्च शिक्षित युवा वर्ग के अभिमतों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत शोध पत्र में किया गया है।

5.'' भारतीय इतिहास लेखन और 1857 की क्रान्ति ''– डा. नन्दन कुमार, इतिहास विभाग जगदम कॉलेज, छपरा (बिहार)

1857 की क्रान्ति के संबंध में सर्वाधिक विवाद इस बिन्दु पर है कि क्या इसे भारत की स्वतंत्रता का प्रथम संग्राम माना जा सकता है। इस विषय पर अंग्रेज लेखकों तथा भारतीय लेखकों के विचार पृथक–पृथक हैं। प्रस्तुत लेख इसी विवाद के विश्लेषण का एक प्रयास रहा है।

6.'' कामकाजी महिलाओं में परिवार व विवाह संबंधी रुझान ''–डा0 निरंजन कुमार सिंह, वरिष्ठ प्रवक्ता, समाजशास्त्र विभाग, फीरोज गॉधी कालेज, रायबरेली (उ0प्र0)

आदि काल से ही महिलायें समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही हैं। घरेलू जिम्मेदारियाँ तो लगभग उनके हवाले हैं ही, घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर भी लगभग सभी क्षेत्रों में वे पुरुषों के साथ कन्धे–से–कन्धा मिलाकर चल रही हैं। विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में अपनी अर्जित प्रस्थिति और उनसे जुड़ी भूमिकाओं का निष्पादन उनकी सोच को कहॉ तक परिवर्तित कर रहा है यह शोध का महत्वपूर्ण विषय है। इस शोध–पत्र में कामकाजी महिलाओं में परिवार व विवाह सम्बंधी अभिनव रुझान की एक झलक देखी जा सकती है।

7.''महिला सशक्तिकरण के प्रति जन–चेतना जागृत करने में समाचार–पत्रों का योगदान ''–डॉ. सुधांशु अग्रवाल, वरिष्ठ प्रवक्ता, पत्रकारिता एवं जनसंचार केन्द्र, हे.न.ब. केन्द्रीय गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल (उत्तराखण्ड), डॉ. दिनेश चन्द्र, अंशकालिक प्रवक्ता, पत्रकारिता एवं जनसंचार केन्द्र, हे.न.ब. केन्द्रीय गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

किसी भी देश के विकास के लिए यह अत्यावश्यक है कि देश की आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक दशाएं अनुकूल होने के साथ ही वहां की प्रेस उस देश के विकास में सहभागिता का भाव रखती हो। इसमें कोई संदेह नहीं कि समाज की मानसिकता का निर्माण करने में मीडिया की भूमिका अद्वितीय होती है। प्रस्तुत लेख महिला सशक्तिकरण के प्रति जन–चेतना जागृत करने में समाचार पत्रों के योगदान को प्रकाशित करता है।

8.''महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना–एक अध्ययन''–डॉ. आनंद मूर्ति मिश्रा, व्याख्याता, मानव विज्ञान एवं जनजाति अध्ययन शाला, बस्तर विश्वविद्यालय, जगदलपुर (छततीसगढ़)

महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारन्टी योजना (मनरेगा) को गरीबी दूर करने, असमानता कम करने और पोषण का स्तर सुधारने की दिशा में सर्वाधिक प्रभावी रणनीति के रूप में तैयार गया है। यह आशा की जाती है कि देश में व्याप्त भुखमरी एवं गरीबी को कम करने में यह योजना मील का पत्थर सिद्ध होगी। प्रस्तुत लेख छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर जनपद में इस योजना से संबंधित जागरूकता का अध्ययन करने का प्रयास है।

9.''पंचायती राज व्यवस्था में ग्रामीण महिलाओं की परिवर्ती प्रस्थिति''–कु. वंदना वर्मा, अंशकालिक प्रवक्ता के.के.पी.जी. कालेज, इटावा (उ. प्र.), डॉ. उदयवीर सिंह, एसोशिएट प्रोफेसर के.के.पी.जी. कालेज, इटावा (उ. प्र.)

73वें संविधन संशोधन द्वारा पंचायती राज व्यवस्था के अंतर्गत महिलाओं के लिए एक तिहाई स्थान आरक्षित किये गये हैं। इसके फलस्वरूप महिलाओं की प्रस्थिति में काफी सुधार हुआ है। प्रस्तुत लेख पंचायती राज व्यवस्था के फलस्वरूप महिलाओं की प्रस्थिति में हो रहे परिवर्तनों को प्रदर्शित करने का एक प्रयास है।

10.'' महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राध्यापकों में धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति ''–जितेन्द्र कुमार सिंह, शोधार्थी, शिक्षा संकाय, गोकुल दास हिन्दू गर्ल्स कालेज, मुरादाबाद, (उ.प्र.), डा. राकेश कुमार आजाद, वरिष्ठ प्रवक्ता, शिक्षा संकाय, बरेली कालेज, बरेली (उ.प्र.)

भारतवर्ष धर्म प्रधान देश है। यहाँ पर अनेक धर्मो के मानने वाले लोग रहते हैं। इस कारण हमारे लोकतंत्र के सम्मुख धर्म को लेकर कुछ विशिष्ट समस्यायें आती रहती हैं। धर्मनिरपेक्षता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा साम्प्रदायिकता मानी गयी है। भारत में कई धर्म जैसे–हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन एवं बौद्ध धर्म मुख्य हैं। यह सभी धर्म अपने को श्रेष्ठ एवं दूसरे को हेय मानते हैं, जिसके कारण उनसे जुड़े लोगों की विचारधारा में कटुता व्याप्त रहती है। इस कटुता के कारण देश की एकता को भारी क्षति पहुंचती है। प्रस्तुत शोध पत्र में भविष्य के अध्यापकों की धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति को जानने का प्रयास किया गया है।

11.'' गाँधी जी के आर्थिक विचार और वर्तमान भारत में उनकी उपयोगिता''– डॉ. अचला सोनकर, प्रवक्ता– इतिहास विभाग, दयानन्द गर्ल्स कालेज, कानपुर, (उ0प्र0)

गांधी जी के आर्थिक विचारों के संबंध में सदैव यह तर्क दिया जाता है कि वह प्रायोगिक न होकर आदर्शवाद पर आधारित होने के कारण कारगर या प्रभावी रूप में व्यावहारिक तौर पर प्रयोग हेतु अनुपयुक्त हैं। परन्तु विचारणीय तथ्य यहां यह दिखाई देता है कि वर्तमान युग में किसी भी विचार के उपयोगी भाग को ग्रहण करने की प्रणाली का पालन किया जाने लगा है चाहें वह पूंजीवाद हो, समाजवाद हो या लोकतंत्र हो। तब आवश्यकता है– गांधी के आर्थिक विचारों के उन बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित करने की जिन्हें हम वर्तमान संदर्भ में क्रियान्वित कर सकते हैं। प्रस्तुत लेख वर्तमान भारत में गांधी जी के आर्थिक विचारों की उपयोगिता को प्रकाशित करने का प्रयास रहा है।

12.'' हरिद्वार स्थित वानप्रस्थ आश्रम की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता''– डॉ0 जगदीश चन्द्र आर्य, रीडर एवं अध्यक्ष–समाजशास्त्र विभाग एस.एम.जे.एन. (पी.जी.) कालेज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

माता–पिता की जिम्मेदारी अपने ऊपर होना आज युवा पीढ़ी के लिए एक समस्या बन गई है। दफ्तर की कैंटीन से लेकर शानदार ड्राइंग रूम और साइबर स्पेस तक वे हर कहीं यही बात करते हैं कि माता–पिता की देखभाल किस तरह की जाय ? वे उस भारत के हैं जहाँ गाँधीवादी मितव्ययिता गायब हो चुकी है, वे स्वार्थी बन चुके हैं। वे अपने माँ–बाप को बोझ के रूप में देखने लगे हैं। पाश्चात्य संस्कृति, भारतीय संस्कृति पर हावी होती जा रही है। इसी का प्रभाव है कि संतान, माता–पिता से दूर होकर वृद्ध आश्रमों का सहारा ले रहे हैं।

13.'' कार्य कारण सिद्धांत (सांख्य)''– डॉ. मृगेन्द्र कुमार सिंह, दर्शनशास्त्र विभाग, हे.न.ब. गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (उत्तराखण्ड)

संसार की व्यवस्था को देखकर यह भाव उत्पन्न होता है कि यह व्यवस्था किसी निश्चित नियम के अनुसार है या फिर सब कुछ अनिश्चित है। भारतीय दर्शन में इस विषय पर पर्याप्त व्याख्या मिलती है। पाश्चात्य दर्शन में भी अरस्तू, ह्यूम आदि चिन्तकों ने कार्य–कारण सिद्धांत की व्याख्या की है। सांख्य दर्शन में इस सांसारिक व्यवस्था एवं विकास को कार्यकारण सिद्धांत के द्वारा स्पष्ट किया गया है। उनके इस सिद्धांत को सत्कार्यवाद कहा गया है।सांख्य दार्शनिक कार्य कारण के बीच एक अनिवार्य सम्बन्ध मानते हैं। प्रस्तुत लेख में सांख्यदर्शन के इसी विचार की व्याख्या दी गयी है।

14.'' जनजातियों की समस्याएं एवं विकासः एक अध्ययन''– डॉ. जयकुमार सोनी, सहायक अध्यापक, शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय सागर (म.प्र.)

देश में जनजातीय समुदायों को राष्ट्रीय विकास की मुख्य धारा से जोड़ने हेतु अनेकानेक संवैधानिक एवं शासकीय प्रयासों के बावजूद आज भी शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, पेयजल, आवास, संचार एवं यातायात की सुविधाओं से जनजातीय समुदायों का एक बड़ा भाग वंचित है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत लेख जनजातियों की समस्याओं एवं विकास का चित्रण प्रस्तुत करता है।

15.'' वैश्वीकरण का युवा जीवन पर प्रभाव – एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण''–डॉ. आनन्द प्रकाश सिंह, वरिष्ठ प्रवक्ता– समाजशास्त्र, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोपेश्वर, चमोली (उत्तराखण्ड)

दुनिया में बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में वैश्वीकरण की संकल्पना सामने आई। यह राजनीतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक तथा मनुष्य के सांस्कृतिक जीवन के विश्वव्यापी समायेाजन की एक प्रक्रिया है। इसने सामाजिक संरचना के समस्त अवयवों अर्थात परिवार, विवाह, नातेदारी, जाति, धर्म, दर्शन, मूल्य, नीति, परम्परा आदि को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। प्रस्तुत लेख युवा जीवन पर वैश्वीकरण के प्रभावों के समाजशास्त्रीय विश्लेषण का एक प्रयास है।

16.'' पंचायती राज एवं महिला सशक्तिकरणः एक आनुभविक अध्ययन''–डॉ. सरोज तोमर, व्याख्याता, राजनीति विज्ञान एम.एस.जे. महाविद्यालय, भरतपुर (राजस्थान), डॉ. अशोक कुमार, व्याख्याता, समाजशास्त्र एम.एस.जे. महाविद्यालय, भरतपुर (राजस्थान)

सन् 1959 में लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण के द्वारा सभी जाति, धर्म, लिंग, आयु के लोगों को सत्ता में भागीदारी का अवसर दिया गया। इसके कुछ वांछित परिणाम भी मिले। लेकिन देश की आधी आबादी–महिला–इसके लाभों से वंचित रही। इस दिशा में 73वां संविधान संशोधन ऐसा कदम है जो महिलाओं को सत्ता, निर्णय लेने, निर्णय–निर्माण प्रक्रिया आदि में भागीदारी के लिए ग्राम पंचायत में स्थान सुरक्षित करता है, जिससे महिलाओं का सशक्तिकरण हो सके। प्रस्तुत लेख महिला सशक्तिकरण में पंचायती राज की भूमिका को प्रकाशित करने का एक प्रयास है।

17.'' पुराणों में आचार व्यवस्था : एक परिशीलन''–डॉ. मीनाक्षी शर्मा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र, महिला पी.जी. कालेज महाविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)

पुराण भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि हैं। इसलिए पुराणों को पंचम वेद कहा गया है। अपनी जीवनचर्या में जन्म से मृत्यु तक मनुष्य को क्या करना चाहिए क्या नहीं, इसका सविस्तार वर्णन पुराणों में है। प्रस्तुत लेख पुराणों में वर्णित आचार व्यवस्था को प्रकाशित करने का एक प्रयास है।

18.'' भूमण्डलीकरण और महिलाओं पर इसका प्रभाव(भारतीय महिलाओं के सन्दर्भ में)''–डॉ. गार्गी बुलबुल, वरिष्ठ प्रवक्ता समाजशास्त्र विभाग, गिन्दो देवी महिला महाविद्यालय, बदायूं (उ.प्र.)

भूमण्डलीकरण के फलस्वरूप आज महिलायें अपना बौद्धिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक विकास करने के बजाय सस्ते, कामुक और उपभोक्तावादी जाल में फंसकर गुलामी की तरफ कदम बढ़ा रही हैं। आधुनिक मीडिया विशेष रूप से केबिल टी.वी. द्वारा जो उदारवादी पाश्चात्य संस्कृति फैलायी जा रही है वह पितृसत्तात्मक मूल्य व्यवस्था को ही बढ़ावा दे रही है। भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में महिलाओं को हाशिये पर लाने की प्रक्रिया तथा महिलाओं का वस्तुकरण तेजी के साथ बढ़ा है। प्रस्तुत लेख में यह जानने का प्रयास किया गया है कि भूमण्डलीकरण ने भारतीय महिलाओं को कहां तक प्रभावित किया है।

19.'' आत्महत्या का मनोविज्ञान''–श्रीमती रश्मि सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उ.प्र.)

आत्महत्या या ज्ञानकृत मृत्यु का संबंध प्रायः मनोदशा विकृति से होता है। आत्महत्या का प्रयास करना या आत्महत्या कर लेना इस बात पर आधारित है कि व्यक्ति कहां तक अपने आपको सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों द्वारा प्रभावित होने देता है व सामाजिक संसाधानों के साथ अपना अंतर्संबंध बना पाता है। प्रस्तुत लेख के अंतर्गत आत्महत्या संबंधी कुछ अन्य रोचक तथ्य प्रेरित कारक, आत्महत्या की प्रवृति की रोकथाम एवं परामर्श सेवाओं का वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

20.'' वर्तमान सन्दर्भ में गाँधी दर्शन की प्रासंगिकता''—डा. श्रीमती साधना पाण्डेय, असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल (म.प्र.)

आधुनिक विश्व में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्र की विविध समस्याओं के समाधान तथा ग्रामीण पुनर्निमाण के लिए गाँधीवादी माडल अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। प्रस्तुत लेख वर्तमान सन्दर्भ में गाँधी दर्शन की प्रासंगिकता को प्रकाशित करने का एक प्रयास है।

21.'' कुष्ठ रोग का सामाजिक प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन''—डॉ. प्रीती द्विवेदी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर— समाजशास्त्र विभाग, महिला (पी.जी.) महाविद्यालय, कानपुर (उ.प्र.)

कुष्ठ रोग केवल चिकित्सा जगत से जुड़ी समस्या न होकर सामाजिक समस्या भी है क्योंकि यह विभिन्न प्रकार के पूर्वाग्रह व भ्रान्तियों से जुड़ी है। समाज में इस बीमारी को एक सामाजिक दाग/कलंक के समान समझा जाता है। यद्यपि एम0डी0टी0 के प्रभाव से वर्तमान में इस रोग की व्यापकता दर में निरन्तर कमी होती जा रही है, किंतु यह भी सत्य है कि आज भी इस रोग से पीड़ित व्यक्ति सामाजिक रूप से बहिष्कृत किये जाते हैं। यह बीमारी उन्हें सामाजिक रूप से मृत बना देती है और व्यक्ति के पिता, पुत्र, पति इत्यादि की अर्जित प्रस्थिति को समाप्त कर देती है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य कुष्ठ रोग के सामाजिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव पर प्रकाश डालना है।

22.'' महिला सशक्तिकरण के दौर में महिलाओं की प्रस्थिति का समाजवैज्ञानिक अध्ययन''—डॉ. ओम प्रकाश भारतीय, असिस्टेन्ट प्रोफेसर— समाजशास्त्र विभाग, डी.ए.वी. कालेज वाराणसी (उ.प्र.)

स्वतंत्रोपरान्त भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार एवं उनके सशक्तिकरण हेतु पारिवारिक, शैक्षणिक, राजनीतिक, वैधानिक, आर्थिक एवं सार्वजनिक आदि समस्त क्षेत्रों में शासन द्वारा अनेकानेक प्रयास किये जा रहे हैं। आधी शताब्दी से अधिक के इस विशाल अंतराल में इन प्रयासों के फलस्वरूप स्त्रियों की वर्तमान स्थिति के आकलन हेतु प्रस्तुत लेख एक प्रयास कहा जा सकता है।

23.'' दल बदल रोकने के संवैधानिक प्रयास व उनकी प्रभावशीलता(52वाँ व 91वाँ संविधान संशोधन अधिनियम)''—डॉ0 श्रद्धा कटियार, असिस्टेंट प्रोफेसर, लोक प्रशासन विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ.प्र.), सुरेन्द्रनाथ यादव, शोध अध्येता, राजनीति शास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ.प्र.)

दल बदल भारतीय संसदीय व्यवस्था का अभिन्न अंग रहा है। भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के अंतर्गत इसका प्रारम्भ 1937 में माना जा सकता है किंतु 1967 के आम चुनावों के पश्चात दल बदल ने इतना तीव्र रूप धारण कर लिया कि यह देश में एक गंभीर राजनीतिक समस्या बन गया है। दल बदल रोकने के लिए किये गये अनेक संवैधानिक प्रयासों के बावजूद यह आज भी भारतीय राजनीति का अभिन्न अंग बना हुआ है। प्रस्तुत लेख देश में दल—बदल की वर्तमान स्थिति तथा संवैधानिक प्रयासों की प्रभावशीलता के मूल्यांकन करने का एक प्रयास रहा है।

24.'' महिलायें एवं राजनीतिक सहभागिता ''—डॉ. ध्रुव भूषण सिंह, प्रवक्ता—समाजशास्त्र, राजकीय महाविद्यालय धानापुर, चन्दौली (उ.प्र.)

भारतीय समाज में लोकतंत्र की सफलता के लिए एवं महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु यह आश्वयक है कि अन्य क्षेत्रों के साथ—साथ महिलाएं राजनीति में भी अपने भागेदारी करें। 73वें संविधान संशोधन के माध्यम से पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की भागेदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से उनके लिए एक तिहाई स्थान आरक्षित किये गये। प्रस्तुत लेख 1994 में इस व्यवस्था के प्रारंभ से लेकर आज तक के विशाल अंतराल में उनकी राजनीतिक सहभागिता के आकलन का एक प्रयास रहा है।

25.'' भारतीय उदारवाद एवं सामाजिक पुनर्जागरण ''—डा. सुमन लता, अंशकालिक प्रवक्ता राजनीति विज्ञान विभाग, हे.न.ब. केन्द्रीय वि.वि. श्रीनगर (उत्तराखण्ड)

19वीं शताब्दी में धर्म सुधारकों एवं उदारवादी विचारकों द्वारा हिन्दू समाज की कुरीतियों को दूर करने के लिए तथा राष्ट्रीय जागरण हेतु महत्वपूर्ण कार्य किये गये। इन सुधारकों द्वारा राष्ट्रवाद के उदय के लिए एवं समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिए किये गये प्रयासों को इतिहास में गौरवपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है। प्रस्तुत लेख भारतीय उदारवादियों द्वारा सामाजिक पुनर्जागरण के लिए किये गये प्रयासों को उजागर करने का एक प्रयास कहा जा सकता है।

26.'' तंग बस्ती के बच्चों में शिक्षा एवं स्वास्थ्य स्तरः एक अध्ययन ''—मोनिका असवाल, शोध अध्येत्री गृह विज्ञान विभाग, हे.नं.ब. गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (उत्तराखण्ड)

किसी भी राष्ट्र की महत्वपूर्ण सम्पत्ति तथा भविष्य 'बच्चे', भारत में आज भी स्वास्थ्य, शिक्षा एवं अन्य महत्वपूर्ण आवश्यकताओं से वंचित हैं तथा वे कुपोषण, अशिक्षा, बाल विवाह आदि समस्याओं का सामना कर रहे हैं। प्रस्तुत लेख तंग बस्ती के बच्चों में शिक्षा एवं स्वास्थ्य स्तर को उजागर करने का एक प्रयास है।

27.'' कन्या भ्रूण हत्या जनित, घटता लिंगानुपात एक विश्लेषणात्मक अध्ययन''—मन्जू कुमारी, शोध अध्येत्री गृहविज्ञान विभाग, माता जीजाबाई शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मोती तबेला, इन्दौर (म.प्र.)

भारत में लिंगानुपात का कम होना साथ ही लगातार उसकी गिरती हुई प्रवृति एक अतिशय गंभीर समस्या है। कन्या भ्रूण हत्या इस समस्या का मूलभूत कारण रहा है। प्रस्तुत लेख भारत और विशेष रूप से मध्य प्रदेश में इस समस्या की भयावह स्थिति का विश्लेषणात्मक चित्रण प्रस्तुत करता है।

28.'' स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना के क्रियान्वयन की समस्याएं एवं समाधान''—जयप्रकाश अहिरवार, शोध अध्येता अर्थशास्त्र, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर (म.प्र.)

एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम, स्वरोजगार हेतु ग्रामीण युवाओं का प्रशिक्षण कार्यक्रम, ग्रामीण क्षेत्र में महिला बाल विकास कार्यक्रम, ग्रामीण दस्तकारों को उन्नत औजारों की किट की आपूर्ति कार्यक्रम, गंगा कल्याण योजना तथा दस लाख कुंआ योजना, इन छः योजनाओं की कमियों में सुधार लाने तथा इन्हें अधिक प्रभावी बनाने के उद्देश्य से इन सभी योजनाओं को समाहित करते हुए महत्वपूर्ण परिवर्तनों के साथ 1 अप्रैल 1999 को 'स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना' लागू की गई। प्रस्तुत लेख इस योजना के क्रियान्वयन की समस्याओं तथा उनके समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत करने के प्रयासों पर आधारित है।

29.'' समाजवादी चिन्तक के रूप में स्वामी विवेकानन्द ''—हरि शंकर गिरि, षोध अध्येता, इतिहास विभाग जयप्रकाष विष्वविद्यालय छपरा (बिहार)

स्वामी विवेकानंद भारत की महान आत्मा थे। उन्होंने अपनी रचनाओं एवं भाषणों से जहां एक ओर भारतीय सभ्यता और संस्कृति की महानता से विश्व के लोगों को परिचित कराया वहीं दूसरी ओर भारतीय समाज और धर्म में व्याप्त कमियों से देशवासियों को परिचित कराकर उन्हें दूर करने का प्रयास किया। भारतीय समाज की दुर्दशा एवं इसके समाधान हेतु उनके द्वारा प्रस्तुत विचारों के आधार पर उन्हें एक समाजवादी चिन्तक भी कहा जाता है। प्रस्तुत लेख इसी तथ्य को प्रकाशित करने की दिशा में एक प्रयास है।

30.'' महिला सशक्तिकरण की साधन शिक्षा का प्रजनन व्यवहार पर प्रभाव ''—श्रीमति हेमलता शर्मा, शोध अध्येत्री, गृह विज्ञान विभाग, एन.के.बी.एम. गर्ल्स पी.जी. कालेज, चन्दौसी, मुरादाबाद (उ.प्र.), डॉ. बी.डी. हरपलानी ,प्राचार्या एवं अध्यक्ष गृह विज्ञान विभाग, एस.बी.डी. गर्ल्स पी.जी. कालेज, धामपुर, बिजनौर (उ.प्र.)

महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य महिला द्वारा शक्ति और संसाधनों की प्राप्ति से है ताकि अपने संबंध में वह स्ययं निर्णय ले सके तथा दूसरों के द्वारा अपने विरूद्ध लिए गए निर्णयों का विरोध कर सके। इस दृष्टि से शिक्षा महिला सशक्तिकरण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण माध्यम है। प्रस्तुत लेख में यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि महिला की शिक्षा का उसके प्रजनन व्यवहार पर क्या प्रभाव पड़ता है।

31. पुस्तक समीक्षा–पुस्तक : 'जवाहर लाल नेहरूः विचारों की प्रासंगिकता', संपादक : डॉ0 के0एन0 व्यास, निदेशक, नेहरू अध्ययन केन्द्र जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.),समीक्षक– डॉ. दिवाकर सिंह राजपूत, उपाचार्य – समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.), संपादक– मध्यभारती (शोध पत्रिका–सागर, म.प्र.),

31. पुस्तक समीक्षा–पुस्तक : 'महानगर में आवास चयन के सामाजिक साँस्कृतिक निर्धारक तत्व', संपादक : डॉ0 रवीन्द्र बंसल, असिस्टेन्ट प्रोफेसर समाजशास्त्र, बरेली कालेज, बरेली (उ.प्र.),समीक्षक–डॉ. ए.एल. श्रीवास्तव, पूर्व अध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग, बी.एच.यू., वाराणसी (उ.प्र.)